अडत व्यापारी शिक्षण संस्था संचलित,

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एवं

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र)

के संयुक्त तत्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"साहित्य, समाज और संस्कृति"

तिथी ०२ मार्च २०२३

✲ प्रमाणपत्र ✲

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/ डॉ./प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

महाविद्यालय राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर के प्रतिभागी ने तिथी ०२ मार्च २०२३ को 'साहित्य समाज और संस्कृति' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभाग लिया एवं सत्राध्यक्ष / विषय प्रवर्तक / शोधालेख वाचक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहकर संगोष्ठी को गरिमा प्रदान की। एतदर्थ प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

शोधालेख का शीर्षक : माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में स्वाधीनता आंदोलन के स्वर

डॉ. मोहन खताळ प्रधानाचार्य देगलूर महाविद्यालय, देगलूर	डॉ. अनिल चिद्रावार उप-प्रधानाचार्य देगलूर महाविद्यालय, देगलूर	डॉ. संतोष येरावार संयोजक स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष	डॉ. व्यंकट खंदकुरे सह-संयोजक देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

हिंदी साहित्य और समाज

संपादक

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार
प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

परिकल्पना

© संपादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 595

ISBN : 978-93-95104-12-8

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना,* के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110092
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

अनुक्रम

भूमंडलीकरण और ज्ञानेन्द्रपति की कविता 13

–डॉ. प्रिया ए.

यशपाल के 'अमिता' उपन्यास में मानवीय मूल्य 20

–प्रा.डॉ. साळुंके शिवहार भुजंगराव

हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान 26

–दीप्ति सिंह

हिन्दी में नारी विमर्श 32

–डॉ. वडचकर एस.ए.

'धोखा' : सहजीवन की समस्या 36

–डॉ. परविंदर कौर महाजन (कोल्हापुरे)

'प्रवासी हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श' 41

–डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला

राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत स्वाधीनताकालीन हिंदी काव्य साहित्य 46

–प्रा. सुनिता मडके

हिन्दी साहित्य में आर्थिक चित्रण 51

–प्रो. डॉ. राजश्री भामरे

शम्बूक : अधिकार हनन और अभिव्यक्ति प्रतिबंध के प्रति विद्रोह 56

–प्रो.डॉ. रमेश संभाजी कुरे

21वीं सदी महिला कथालेखन का बदलता स्वरूप 62

–डॉ. शेख शहनाज अहेमद

स्त्री विमर्श उपन्यास में चित्रित स्त्री समस्याएँ 69

–डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

हिंदी की वैश्विक स्थिति 76

–डॉ. विजय शिवराम पवार

माधवराव सप्रे के निबंध में समाज 82
—प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी
महिला लेखिकाओं के साहित्य में मुक्ति के स्वर 88
—डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड
आँचलिकता की सोंधी महक : फणीश्वरनाथ रेणू 96
—डॉ. नानासाहब शं.गायकवाड 'संगित'
निराला के काव्य में राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति 102
—प्रा. डॉ.पी.एम. भूमरे
संत रैदास के काव्य की प्रासंगिकता 109
—प्रा. डॉ. एम.डी. इंगोले
स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 113
—डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
रमणिका गुप्ता के काव्य में अभिव्यक्त दलित संवेदना 117
—प्रा. डॉ. राहुल पुंडलिकराव वाघमारे
21वीं सदी की हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श 123
—प्रा. डॉ. भगवान कदम
वैश्विक धरातल पर दलित साहित्य 127
—डॉ. अर्चना चंद्रकांत पत्की
वर्तमान मीडिया के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'जंगल की रानी' का अनुशीलन 132
—डॉ. पाटिल माधव सुभाषराव
हिंदी साहित्य में महिला कथाकारों का योगदान 137
—प्रो. डॉ. संजय गड़पायले
मराठी से हिंदी में अनुवादित आत्मकथा में घुमंतू जनजातियों का चित्रण 142
—डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में वस्तुसंबंधी मूल्य 146
—प्रा. डॉ सविता चोखोबा किर्ते
यशपाल कृत उपन्यास दादा कामरेड : नारी विमर्श 150
—डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा
हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री जीवन 154
—प्रा. डॉ. राम दगडू खलंग्रे

जयप्रकाश कर्दम के 'छप्पर' उपन्यास में चित्रित दलित जीवन 162
—कु. भंडारे अनिता कृष्णा
विकलांग हैं पर असामाजिक नहीं 169
—प्रो. डॉ. बबन रंभाजीराव बोडके
आदिवासी विमर्श : एक अवलोकन 174
—प्रा.डॉ. मधुकर राऊत
राहुल सांकृत्यायन के साहित्य की भाषा-शैली 177
—डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे
प्रतिरोध की संस्कृति और किसान विमर्श 182
—प्रा.डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख
आधुनिकता और महिला सशक्तिकरण 186
—प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र
नई शिक्षा नीति 2020 : अवसर, चुनौतियाँ और क्रियान्वयन 193
—डॉ. सूर्यकांत शिंदे
थर्ड जेंडर विमर्श 199
—डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे
तिरोहित उपन्यास में व्यक्त नारी संवेदना 205
—प्रा. डॉ बालिका रामराव काबंले
हिंदी पद्य साहित्य और नारी उत्थान 210
—डॉ. बन्सीलाल हेमलाल गाडीलोहार
हिंदी में अनूदित पंजाबी भाषा का दलित आत्मकथा साहित्य 218
—प्रा. डॉ. सुनिता बनसोड (भगत)
शंकर शेष कृत 'पोस्टर' नाटक और आदिवासी विमर्श 224
—प्रा. डॉ. छाया शेषराव तोटवाड
हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श 229
—प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ
'सत्यासत्य' में पर्यावरण के प्रति आस्था 234
—प्रा. दिगंबर ज्ञानोबा गायकवाड
हिंदी आदिवासी कविता में अभिव्यक्त चेतना 239
—प्रो. डॉ. प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी
सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित विमर्श 243
—प्रा.डॉ. शहाजी बा.चव्हाण

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श 250
—डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे
हिंदी कविता में बाजारवाद, भूमंडलीरण के विशेष संदर्भ में 258
—डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे/प्रा. डॉ. अनिलकुमार रामधन राठोड
माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में स्वाधीनता आंदोलन 264
—प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
आदिसंत संत नामदेव की काव्य-यात्रा का अनुशीलन 268
—प्रा. डॉ. भरत जवंजाले
हिन्दी बाल साहित्य की अवधारणा 274
—प्रा. बाळासाहेब संभाजी कावळे
हिंदी साहित्य में उत्तर आधुनिकता और महिलाओं की स्थिति 279
—प्रा. डॉ. गनी गफूरसाहेब शेख
मन्नू भंडारी कृत 'उजली नगरी चतुर राजा' नाटक की मूल संवेदना 284
—डॉ मुकुंद कवड़े
हिंदी साहित्य में दलित विमर्श 292
—प्रा. डॉ. रमाकांत मोहनराव बिडवे
हिंदी की महिला नाटककार के नाटकों में स्त्री-स्वर 295
—डॉ. रेविता बलभीम कावळे
दलित स्त्री : अभिशप्त जीवन की अनसुनी कहानी 302
—प्रा. डॉ. सरिता सिंधी
हिंदी उपन्यास साहित्य में शिक्षा की समस्याएँ 308
—प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. देशपांडे
भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि का अनुशीलन 313
—कु. ट्विकंल गणेश राजुरकर

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में स्वाधीनता आंदोलन

प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
हिंदी विभाग
राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल अतीत का गौरवगान, राष्ट्रप्रेम और स्वाधीनता आंदोलन का युग रहा है। अंग्रेजों की दमनकारी और अन्याय अत्याचारवाली षड्यंत्रकारी राजनीति ने भारतीय जनमानस की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिस्थिति को खोखला बना दिया था। ऐसी परिस्थिति में अत्याचारी, सामन्ती और शोषण की मानसिकता से युक्त रही अंग्रेजों की राजनीति के खिलाफ हिंदी के समकालीन कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन और जागरण की लहर को जनमानस के मन में जागृत किया। वही साहित्यकार प्रासंगिक या कालजयी कहलाता है जो अपने युग के प्रति सचेत और समकालीन घटनाओं और आंदोलनों से प्रभावित होकर अपनी कविता में उसे अभिव्यक्त करता हो। सन 1857 से शुरू हुई विद्रोही की भावना भारतेंदु युग तथा हिंदी की अन्य कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को मुखर किया। जिस समय अंग्रेजों के खिलाफ एक शब्द भी कहना अपराध था ऐसे समय में राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर हिंदी कवियों ने साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को छेड़ा।

आधुनिक हिंदी कवियों में से एक भारतीय आत्मा के रूप में राष्ट्रप्रेम को संजोनेवाले कवि माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान स्वतंत्राता के आंदोलन में बड़ा सराहनीय रहा है। स्वराज के लिए जिनकी पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम में एक अस्त्र थी, वहीं उनकी कविता राष्ट्रप्रेम और अतीत का गौरव गान के लिए एक मशाल बनकर उभरकर आयी। उनकी कविता में दमनकारी अंग्रेजों के प्रति विद्रोह व्यक्त होता दिखाई देता है। क्योंकि उन्होंने जो भोगा और जो देखा है उसे ही उन्होंने अपनी कविता में शब्दबद्ध किया है। अत्याचारी अंग्रेजों के सामने भारतीय

जनमानस की अवस्था को उन्होंने बहुत नजदीक से अनुभूत किया है। इससे ही वे त्योहार, कैदी और कोकिला, जलियांवाला की बेदी, जवानी जैसी कविताओं में शब्दबद्ध किया है। अंग्रेजों की दासतापूर्ण जीवन को वे स्वाधीनता में बदल देना चाहते हैं। स्वराज के लिए विदेशी अनैतिकता की बेड़ियों से वो मुक्ति चाहते हैं। भारत माता जो मेरी मातृभूमि अथवा घर है वह आज पराधीनता की बेड़ियों में अटकी हुई है, जहाँ देखे वहाँ अन्याय और अत्याचार की गूंज सुनाई देती है। इसके खिलाफ लड़नेवाला प्रत्येक व्यक्ति जेलों में कैद हो जाता है। ऐसे समय कवि माखनलाल चतुर्वेदी अपनी कविता 'घर मेरा है?' के माध्यम से उस समय के भयावह परिवेश को उजागर करते नजर आते हैं :

''क्या कहा कि यह घर मेरा है?
जिसके रवि उगें जेलों में,
संध्या होवें वीरानों में,
उसके कानों में क्यों कहने
आते हो? यह घर मेरा है?''[1]

माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ बलिदान की भावना की शानदार मिसालें हैं। उदात्त राष्ट्रीय भावना को उजागर करने वाली उनकी कविताएँ जन सामान्य में धधकती मशाल बन कर उभर कर आयी हैं। वे 'पुष्प की अभिलाषा' इस कविता में राष्ट्र भक्ति और राष्ट्र के लिए बलिदान का बेहतर चित्राण करते दिखाई देते हैं। जहाँ एक पुष्प अपनी मनोकामना को व्यक्त करता है कि मैं मातृभूमि की रक्षा करनेवाले वीर सेनानियों की सेवा में ही अपने जीवन की सार्थकता समझता हूँ। मैं न किसी के बालों में, न किसी के गले में विराजमान होना चाहता हूँ बल्कि मातृभूमि के लिए मर मिटने या शहीद होने के लिए जाने वाले उन वीर पदचिह्नों के स्पर्श से मैं कृतार्थ होना चाहता हूँ :

''चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिन्ध प्यारी को ललचाऊँ।
मुझे तोड़ लेना, वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएं वीर अनेक।''[2]

पराधीनता कि लपेट में झुलस रहे भारतीय जनमानस का खून अंग्रेजों की

षड्यंत्रकारी नीतियों के विरुद्ध खौल उठता है। इसलिए प्रत्येक भारतीय व्यक्ति मातृभूमि के लिए जंजीरों को पहनना अपना सौभाग्य समझता है। अंग्रेजों की हथकड़ियां मानो उनके लिए गहना हो। इसी भाव को माखनलाल चतुर्वेदी की 'कैदी और कोकिला' यह कविता व्यक्त करती है :

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूं? जीवन की तान,
मिट्टी पर उंगलियों ने लिखे गान।"[3]

माखनलाल चतुर्वेदी के अनुसार सच्चा देश प्रेमी वही होता है जो कभी मातृभूमि के लिए बलिदान देने से पीछे नहीं हटता। वह जवान ही क्या जो देश की स्वतंत्रता के लिए अपने आप को निछावर न कर दें। उनकी प्रसिद्ध कविता 'जवानी' इस कविता में शब्द शोले बनकर अभिव्यक्ति हुई है :

"द्वार बलि का खोल चल भूडोल कर दे,
एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दे।
मसल दे अपने इरादों से उठाकर,
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दे।
रक्त है या है नसों में एक क्षुद्र पानी,
जांच कर तू सिस दे देकर जवानी।"[4]

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता राष्ट्रप्रेम की असीम भावना जताते हुए मातृभूमि के लिए मर मिटने हेतु प्रेरित करती है। विद्रोह की भावना उस समय के स्वतंत्रता सेनानियों के रंगों में बड़े जोरशोर से दहल रही थी। मातृभूमि के लिए मिट्टी में मिल जाना यही जीवन का अंतिम और सुखद आनंद होता है जो जीवन को सार्थकता प्रदान करता है। उनकी कविता 'विद्रोह' इसी भाव को व्यक्त करती है :

"मैंने मिट जाने में सीखा
है जग में हरियाना
मेरी हरियाली दुनिया है
मिट्टी में मिल जाना।"[5]

माखनलाल चतुर्वेदी जी की म. गाँधीजी के प्रति अटूट निष्ठा थी। उनके अहिंसा, असहकारिता और शांतिपूर्ण आन्दोलन में माखनलाल चतुर्वेदी विश्वास रखते थे। आजादी के लिए महात्मा गाँधीजी की ओर से किए जा रहे प्रशंसनीय योगदान को भी वे अपनी कविता में व्यक्त करते हैं। उनकी कविता 'सत्याग्रही का बयान' में यही भाव व्यक्त हुआ है :

"हूँ राष्ट्रीय सभा का सैनिक
छोटा-सा अनुगामी हूँ।
उसकी ध्वनि पर मर मिटने में
मैं खुद अपना स्वामी हूँ।" [6]

निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो माखनलाल चतुर्वेदी की कविताएँ राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत रही। जिसमें वे कवि के साथ साथ एक स्वतंत्रता सेनानी बनकर भी अपना अमूल्य योगदान दिया। स्वाधीनता की भावना,आत्म बलिदान की भावना, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का समुचित चित्रण उनकी कविता में उजागर हुआ है। ओजपूर्ण वाणी, शौर्य एवं वीरता तथा आत्म गौरव का गुनगान उनकी कविता में महिमामंडित हुआ है। स्वाधीनता के संग्राम मैं की फनकार ओर पौरुष की प्रधानता उनकी कविता में सहज व्यक्त होती है।

संदर्भ

1. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : माखनलाल चतुर्वेदी, संपा. हरिकृष्ण प्रेमी, चौथा संस्करण 1970, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीर गेट दिल्ली- 6, पृ. 56
2. आजादी के लड़ाई जब्तशुदा तराने, पहला संस्करण 1998, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 111
3. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : माखनलाल चतुर्वेदी, संपा. हरिकृष्ण प्रेमी, चौथा संस्करण 1970, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट दिल्ली-6, पृ. 72
4. राष्ट्र भक्ति गान, अंजीव रावत, तृतीय संस्करण 2017, वैभव बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर-19, पृ. 24
5. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : माखनलाल चतुर्वेदी, संपा. हरिकृष्ण प्रेमी, चौथा संस्करण 1970, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीर गेट दिल्ली-6, पृ. 85
6. वही, पृ. 96